S-627 Roll No. …………………..

MASL–204

नाटक एवं नाटिका

एम. ए. संस्कृत (एमएएसएल–12/16/17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नाट्य साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए।
2. 'रत्नावली' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पद्यों की व्याख्या कीजिए—

(क) लिम्पतीव तमोऽङ्गानि
वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव
दृष्टिर्विफलतां गता॥

(ख) सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति।

(ग) स्त्रियो हि नाम ठाल्वेता
निसर्गादेव पण्डिताः।
पुरुषाणां तु पाण्डित्यं
शास्त्रैरेवोपदिश्यते॥

(घ) जानामि चारुदत्तं वसन्तसेनां च सुष्ठु जानामि।
प्राप्ते राजकार्ये पितरमप्यहं न जानामि॥

4. वसन्तसेना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'मृच्छकटिकम्' के प्रथम अंक का सारांश लिखिए।
2. रत्नावली के द्वितीय अंक का सारांश लिखिए।
3. वासवदत्ता का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. चारुदत्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5. 'मृच्छकटिकम्' में सामाजिक चित्रण पर प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित का अनुवाद कीजिए—

पातु वो नीलकण्ठस्य कण्ठः श्यामाम्बुदोपमः।
गौरीभुजलता यत्र विद्युल्लेषेत राजते।

7. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए—

कुसुमसुकुमारमूर्तिर्दधती नियमेन तनुतरं मध्यम्।
आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव॥

8. आमात्य यौगन्धरायण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड—ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. पार्वती की पुष्पाञ्जलि रक्षा करे—यह भाव किसकी नान्दी में आया है ?
   (अ) मृच्छकटिकम् की
   (ब) रत्नावली की
   (स) विक्रमोर्वशीयम् की
   (द) नागानन्द की

2. 'सागरिका' है—
   (अ) वसन्तसेना
   (ब) धूता
   (स) रत्नावली
   (द) वासवदत्ता

3. 'मदनमहोत्सव' का वर्णन हुआ है—
   (अ) रत्नावली के प्रथम अंक में
   (ब) रत्नावली के द्वितीय अंक में
   (स) रत्नावली के तृतीय अंक में
   (द) रत्नावली के चतुर्थ अंक में

4. 'रत्नावली' है—
   (अ) नाटक
   (ब) प्रकरण
   (स) नाटिका
   (द) भाणा

5. 'साहसे श्रीः वसति।' यह कथन किसका है ?
   (अ) शर्विलक का
   (ब) शकार का
   (स) चारुदत्त का
   (द) चन्दक का

6. 'मृच्छकटिकम्' में कुल अंक हैं—
   (अ) 8
   (ब) 10
   (स) 6
   (द) 9

7. 'मृच्छकटिकम्' में विदूषक का नाम है—
   (अ) मैत्रेय

(ब) शकार

(स) शर्विलक

(द) आर्यक

8. शकार पात्र का वर्णन मिलता है—

(अ) रत्नावली में

(ब) मृच्छकटिकम् में

(स) नागानन्द में

(द) प्रियदर्शिका में

9. रत्नावली का अङ्गी रस है—

(अ) श्रृंगार

(ब) करुण

(स) हास्य

(द) वीर

10. 'मृच्छकटिकम्' का अभिनय प्रारम्भ होता है—

(अ) प्रत्यूष काल में

(ब) प्रदोष काल में

(स) मध्याह्न काल में

(द) रात्रि में